APRIL 2014 TO MARCH 2015

नवभारत

रायपुर, रविवार 16 नवंबर 2014

www.navabharat.org

कृषक संगोष्ठी में महिलाओं को प्रशिक्षण

नगर संवाददाता

कृषि वैज्ञानिकों ने खेतों का भ्रमण किया

दैनिक भास्कर कवर्धा

विशेषज्ञों ने किसानों को दी रोगों की जानकारी

किसानों को कीट नियंत्रण के उपाय बताये

नगर संवाददाता

प्रशिक्षण लेकर रोजगार करें युवा : विधायक

कार्यक्रम • विकासखंड बोड़ला में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने उन्नत किस्म की धान का फसल लेने किसानों को दी सलाह

कर्मामासुरी धान देगी ज्यादा उपज

कवर्धा

bureau@patrika.com

विकासखंड बोड़ला में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। प्रक्षेत्र दिवस पर कृषकों को धान की किस्म कर्मामासुरी की जानकारी दी गई। इसके तहत कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा बोड़ला ब्लॉक के 12 कृषकों के यहां इस किस्म का प्रदर्शन किया गया था।

कृषक ज्यादातर स्वर्णा धान की किस्म अधिक लगाते है क्योंकि इस किस्म से कृषकों को उत्पादन अधिक मिलता है। किन्तु इस किस्म में झुलसा बिमारी का प्रकोप भी अधिक होता है अतः इस किस्म को इसकी उत्पादकता के साथ स्थानांतरित करने के लिए कर्मा मासुरी धान का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। यह किस्म उत्पादन तो अधिक देती ही है साथ इसमें झुलसा रोग का प्रकोप भी अपेक्षाकृत कम होता है। प्रक्षेत्र दिवस में कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ.बीपी त्रिपाठी ने कृषकों को धान के झुलसा रोग, जीवाणु जनित रोग और कंडवा की विस्तृत जानकारी दी। इस समय धान के खेत में कंडवा (लाई फूटने) की समस्या ज्यादा देखने को मिली जिसके लिए डॉ. त्रिपाठी ने किसानों का बीज उपचार और गभोट अवस्था के समय प्रोपिकोनाजोल दवा 300 मिली प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करने के लिए सुझाव दिए। सस्य विज्ञान के विषय वस्तु विशेषज्ञ बीएस परिहार ने कृषकों को सस्य क्रिया और उर्वरक प्रबंधन के संबंध में विस्तार से समझाया। प्रक्षेत्र दिवस पर सहायक संचालक कृषि पीजी गोस्वामी ने कृषकों को कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी और इनका लाभ लेने को कहा। टीएसी सोनवानी ने कृषकों को कृषि यंत्रों के उपयोग और रख रखाव के संबंध में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में अनुविभागीय अधिकारी पीडी हथेश्वर, क्षेत्र के कृषि विस्तार अधिकारी बृजमोहन चंद्रवंशी सहित बोड़ला ब्लाक के किसानों ने कृषि की नई तकनीकी की जानकारी प्राप्त की।

कवर्धा. कर्मामासुरी धान का बोड़ला ब्लाक में प्रदर्शन किया गया।

र ,14 नवम्बर 2014 कवर्धा हरि

कृषक संगोष्ठी व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा में विगत दिनों एक वृहद कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कार्ड एनजीओ के तहत स्वयं सहायता समूह की कुल 60 आदिवासी कृषक महिलाओं ने इस संगोष्ठी में भाग लिया एवं कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा का भ्रमण किया। संगोष्ठी के दौरान कृषक महिलाओं को प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बीपी त्रिपाठी द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियां जैसे अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रक्षेत्र परीक्षण, आदिवासी कृषक व कृषक महिलाओं को प्रशिक्षण आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इसके साथ ही कृषक महिलाओं को स्वरोजगार हेतु मशरूम उत्पादन तकनीकी के बारे में विस्तृत जानकारी दी और मशरूम स्पान बीज कैसे बनाते हैं एवं मशरूम उत्पादन के लिए कौन से माध्यम हैं, उससे क्या-क्या उत्पाद बनाते हैं जैसे मशरूम पापड़, मशरूम बड़ी, मशरूम आचार और अन्य व्यंजन बनाने की तकनीकी के बारे में बताया। जिसका उपयोग कर कृषक महिलाएं अपने बच्चों को कुपोषण से दूर रख सकती हैं। साथ ही इसका व्यावसायिक स्तर पर उत्पादन कर आय अर्जित कर सकती हैं। कृषक संगोष्ठी में सस्य वैज्ञानिक बीएस परिहार द्वारा आदिवासी कृषक महिलाओं को खेती किसानी में स्वरोजगार के अवसर के बारे में बताया।

APRIL 2014 TO MARCH 2015

राजनांदगांव, शुक्रवार, 14.11.2014 पत्रिका राजनांदगांव

आदिवासी महिलाओं को मिला मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा वृहद कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षण भी दिया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र व कार्ड एनजीओ के तहत स्वयं सहायता समूह की 60 महिलाओं ने कृषक संगोष्ठी में हिस्सा लिया, जिन्हें केन्द्र द्वारा भ्रमण भी कराया गया। यहीं कृषक संगोष्ठी में कार्यक्रम समन्वयक बीपी त्रिपाठी ने अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, प्रक्षेत्र परीक्षण की जानकारी दी गई। इस दौरान मशरूम उत्पादन, मशरूम से पापड़, बड़ी और आचार बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। वहीं, खेती में स्वरोजगार के अवसर के बारे में बताया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने किया क्षेत्र का भ्रमण, विभिन्न क्षेत्रों में मिली अलग-अलग समस्याएं

अरहर में चूसक कीट का प्रकोप

कवर्धा

bureau@patrika.com

पिछले 3-4 दिनों से आए मौसम में परिवर्तन के कारण सुबह से ही कोहरे व बादली छाए रहते हैं। यह मौसम अरहर की फसलों के लिए बेहद नुकसानदायक साबित हो रहा है।

अरहर के फसल में वर्तमान में फूल लगने की अवस्था है। ऐसी अवस्था में पर्याप्त धूप व खुले वातावरण की आवश्यकता होती है। लेकिन मौसम में उपस्थित आवश्यकता से अधिक नमी के कारण किसानों के खेत में रस चूसक कीट का प्रकोप देखने को मिल रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा आदिवासी उपयोजना अंतर्गत ग्राम बैजलपुर में किसानों के खेत का भ्रमण किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने कीट प्रकोप के बचाव के लिए फ्लोबेन्डामाइड 60 मिली पानी के हिसाब से डालने का सुझाव दिए हैं।

बोड़ला ब्लाक के अन्य अरहर खेत का भ्रमण कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया, जिसमें पत्ती मोड़क की समस्या देखने को मिली। इसके लिए वैज्ञानिकों ने कारटापएस.पी. 200-400 ग्राम प्रति हेक्टेयर में छिड़काव करने के सुझाव दिए हैं। इसके अलावा कृषि वैज्ञानिकों ने मौजूद कृषकों को नमी के मौसम में अन्य फसलों की देखभाल कैसे की जाती और अधिक उपज के लिए किस प्रकार के उर्वरक का छिड़काव करना चाहिए, इसकी भी विस्तृत जानकारी दिए।

कवर्धा. अरहर फसल के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के दौरान मौजूद कृषक।

कवर्धा | हरिभूमि

चने के समन्वित पौध संरक्षण की बताई विधि

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक एवं पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कृषक संगोष्ठी प्रशिक्षण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से किसानों को बीजोपचार की जानकारी दी। ज्ञात हो कि कबीरधाम जिले में लगभग 85 हजार हेक्टेयर में चने की खेती की जाती है। जिसमें बुआई के बाद से पौधे मरने लगते हैं और कटाई तक रोग ग्रसित रहते हैं। जिसका मुख्य कारण फफूंद है जो प्रायः चने की फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। जिसमें सबसे ज्यादा नुकसान स्क्लेरोशियम नामक फफूंद जिससे कालर राट बिमारी आती है इसके प्रबंधन हेतु किसानों को अच्छे बीज एवं अनुशंसित किस्म का बीज चयन करना चाहिए। इसके साथ ही एक ही खेत में बार-बार चना न लगाकर फसल चक्र परिवर्तन अपनाना चाहिए। चने की बीज बुआई के पूर्व फफूंदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम अथवा मेन्कोजेब 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करें। साथ-साथ बुआई के पूर्व खेत में नमी उपरांत बुआई करें, जिससे बीज अंकुरित हो जाएगा। प्रायः किसान बुआई के तुरंत बाद सिंचाई करता है जिससे फफूंद तेजी से सक्रिय हो जाता है। इन सारी बातों को ध्यान रखने से चने में कालर राट, उठका एवं जड़ सड़न की समस्या कम देखने को मिलेगी।

युवाओं व कृषि स्नातकों को दिया गया प्रशिक्षण

- सात दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा में 7 अक्टूबर से 13 अक्टूबर तक संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र कवर्धा एवं भोरमदेव कृषि महाविद्यालय कवर्धा के स्नातक कृषि अंतिम वर्ष के 50 छात्रों को सात दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण की शुरुआत कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र कवर्धा द्वारा किया गया। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियां जैसे प्रक्षेत्र प्रदर्शन, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, ग्रामीण कृषकों एवं कृषक महिलाओं को प्रशिक्षण आदि की विस्तृत जानकारी दी गई। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी द्वारा खरीफ फसलें जैसे सोयाबीन, धान, अरहर, मूंग, उड़द आदि के कीट व्याधि की पहचान व समन्वित प्रबंधन तथा मशरूम उत्पादन तकनीकी के बारे में बताया गया। साथ में रबी फसल जैसे चना, गन्ना की बीमारी एवं ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशक उत्पादन तकनीकी की जानकारी दी गई।

वैज्ञानिक प्रमिलाकांत द्वारा सब्जियों की नर्सरी प्रबंधन, उत्पादन एवं फूलों-फलों की खेती कैसे करें इस पर जानकारी दी गई। डॉ. नूतन रामटेके द्वारा पशुपालन एवं प्रबंधन संबंधित जानकारी दी गई। इंजीनियर टीएस सोनवानी द्वारा कृषि यंत्रों का समुचित प्रयोग व रखरखाव के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण के समापन में वैज्ञानिक द्वारा कृषि में स्वरोजगार के अवसर के पहलुओं पर भी सभी नवयुवकों को जानकारी दी गई।

कृषि ज्ञान...

कवर्धा। कृषि वैज्ञानिकों ने चने के समन्वित पौध संरक्षण की विधि किसानों को बताई।

APRIL 2014 TO MARCH 2015

कवर्धा-राजनांदगां[...]

पत्रिका . कवर्धा . गुरुवार . 29 जनवरी 2015

kawardha-rajnan[...]

समस्या ▸ मौसम परिवर्तन से चना, अरहर, सरसों की फसल में बीमारी

फसलों में कीटों का प्रकोप

[illegible]

वैज्ञानिकों के सुझाव

[illegible]

[...]री 2015 कवर्धा हरिभूमि

रबी फसलों में समन्वित पौध संरक्षण के उपाय

हरिभूमि न्यूज . कवर्धा

[illegible]

प्रशिक्षण कृषि विशेषज्ञों ने सुखाताल के किसानों को गन्ने की सुरक्षा [...]

बीज उपचार की तकनीक बताई

भास्कर न्यूज | कवर्धा

किसानों को बीजोपचार विधि से गन्ने की बोआई की तकनीक बताते कृषि विशेषज्ञ।

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बीपी त्रिपाठी एवं कार्यक्रम सहायक स्वाति शर्मा ने प्रशिक्षण एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से जिले के किसानों को गन्ना पौध सुरक्षा के तरीकों की जानकारी दी। जिससे गन्ने का अधिक से अधिक उत्पादन हो सके। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा ग्राम सुखाताल में शनिवार को अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम के तहत गर्म जल एवं रसायनिक दवा टेबुकोनाजेल 0.1 प्रतिशत मात्रा द्वारा 12 कृषकों को बीज उपचार की तकनीकी बताई गई।

कार्यक्रम समन्वयक डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि जिले में गन्ने का रकबा प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है और इसी के साथ गन्ने के प्रमुख बीमारी लाल-सड़न एवं कीट इल्ली का प्रकोप भी निरंतर बढ़ता जा रहा है। जिसे देखते हुए उन्होंने किसानों को गन्ने की बुआई के पूर्व काफी सावधानियां बरतने का सुझाव दिए। जिससे कम से कम रोग एवं कीट का प्रकोप फसल में हो। उन्होंने कहा कि गन्ने की बुआई के पूर्व टेबुकोनाजोल रसायनिक दवा की 0.01 प्रतिशत मात्रा में गन्ने के टुकड़े को 15 से 20 मिनट डुबाकर रखने के बाद बुआई करने पर लाल सड़न बीमारी के प्रकोप की संभावना कम रहती है। साथ ही बुआई के पूर्व स्वस्थ गन्ने के बीच जिसमें किसी प्रकार की बीमारी व कीड़े न हो उसका उपयोग करें।

उन्होंने कहा कि इल्ली के नियंत्रण के लिए कर्टाप हाइड्रोक्लोराइड की चार से सात किलोग्राम की मात्रा बुआई के समय नालियों में छिड़[...] चाहिए। इन सभी मुख्य बिन्दुओं को ध्या[...] में रखकर गन्ने की फसल का ज्यादा से ज्याद[...] उत्पादन कर आय का स्त्रोत बढ़ा सकते हैं।

कृषि विज्ञान केंद्र ने प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया

नगर संवाददाता

[...] किस्म अधिक लगाते है क्योंकि इस किस्म से कृषकों को उत्पादन [...]

[...] एवं गभोट अवस्था के समय प्रोपेकोनाजोल दवा 300 मिली.प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करने के [...]

दैनिक भास्कर

[...], सोमवार 19 जनवरी, 2015 | 20

कीट व्याधि रोकने कृषि वैज्ञानिकों ने दिए टिप्स

कवर्धा|कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने रबी फसल में कीट व्याधि के प्रकोप से बचने का उपाय बताया। जिससे किसान फसलों से अच्छा उत्पादन लेकर लाभ प्राप्त कर सकें। जिले में करीब 85 हजार हेक्टेयर भूमि में चने की खेती की जाती है। वर्तमान में चने की फसल में अच्छी तादात में फूल आने की अवस्था है। कुछ जगहों पर चने एवं अरहर की फसल में इल्ली की समस्या देखने को मिल रही है। इल्ली के प्रकोप से बचाव के लिए एंडोक्साकार्ब 200 मिली प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करने का सुझाव कृषि वैज्ञानिकों ने दिया है। पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने बताया कि इन दिनों टमाटर एवं बैगन में अगेती झुलसा एवं आलू में पछेती झुलसा नामक रोग की समस्या देखने को मिल रही है। इससे बचने के लिए मैन्कोजेब एवं कार्बेन्डाजिम के मिश्रण को 250 मिली की दर से छिड़काव करें।